

---

# Shri Sitarama Ashtakam

श्रीसीतारामाष्टकम्

## Document Information

---

Text title : sItArAmAShTakam

File name : siitaaraama8.itx

Category : aShTaka, raama

Location : doc\_raama

Author : achyutayati

Transliterated by : <http://www.webdunia.com>

Proofread by : Kirk Wortman kirkwort at hotmail.com

Latest update : January 13, 2002

Send corrections to : [sanskrit at cheerful dot c om](mailto:sanskrit@cheerful dot c om)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 29, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

# Shri Sitarama Ashtakam

## श्रीसीतारामाष्टकम्



ब्रह्मभङ्गेन्द्रसुरेन्द्रमरुद्गणरुद्रमुनीन्द्रगणैरतिरभ्यं

क्षीरसरित्पतितीरमुपेत्य नुतं छि सतामवितारमुदारम् ।

भूमिभरप्रशमार्थमथ प्रथितप्रकटीकृतचिद्धनमूर्तिं

त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाधन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ १ ॥

पद्मदलायतलोचन छे रघुवंशविभूषण देव दयालो

निर्मलनीरदनीलतनोऽभिललोकलुदम्बुजभासक भानो ।

कोमलगान्धर्वपवित्रपदाब्जरजःकण्ठापावित गौतमकान्त

त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाधन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ २ ॥

पूर्णा परात्पर पालय मामतिदीनमनाथमनन्तसुभाष्ये

प्रावृडभ्रतडित्सुमनोऽरपीतवराभर राम नमस्ते ।

कामविभङ्गन कान्ततरानन काञ्चनभूषण रत्नकिरीट

त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाधन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ३ ॥

दिव्यशरच्छशिकान्तिऽरोज्ज्वलमौक्तिऽकमालविशालसुमौले

कोटिरविप्रभ यारुचरित्रपवित्र विचित्रधनुःशरपाणे ।

याऽऽमडाभुजदण्डविभ्रण्डितराक्षसराजमडागजदण्डं

त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाधन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ४ ॥

दोषविहिंस्रभुजङ्गसाऽसुरोषमडानलकीलकलापे

जन्मजरामरणोर्भिमये मदमन्मथनऽकविचक्रभवाभ्यौ ।

दुःखनिधौ य चिरं पतितं कृपयाद्य समुद्भर राम ततो माम्

त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाधन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ५ ॥

संसृतिघोरमदोऽकटकुञ्जरत्तृक्षुदनीरदपिण्डिततुण्डं

दण्डकरोन्मथितं य रजस्तम उन्मदमोऽपदोऽज्जितमार्तम् ।

दीनमनन्यगतिं कृपां शरणागतमाशु विमोचय मूढम्

त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाधन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ६ ॥

जन्मशतार्जितपापसमन्वितदुःखमले पतिते पशुकल्पे

डे रघुवीर मडाराणधीर दयां कुरु मय्यतिमन्मनीषे ।

त्वं जननी भगिनी य पिता मम तावदसि त्ववितापि कृपालो

त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाधन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ७ ॥

त्वां तु दयालुमङ्गिञ्चनवत्सलमुत्पलदारमपारमुदारं राम

विधाय कमन्यमनामयमीश जनं शरणं ननु यायाम् ।

त्वत्पदपद्ममतः श्रितमेव मुदा भलु देव सदाव ससीत

त्वां भजतो रघुनन्दन देहि दयाधन मे स्वपदाम्बुजदास्यम् ॥ ८ ॥

यः करुणामृतसिन्धुरनाथजनोत्तमभन्धुरजोत्तमकारी

भक्तभयोर्मिभवाब्धितरिः सरयूतटिनीतटयारुविहारी ।


तस्य रघुप्रवरस्य निरन्तरमष्टकमेतदनिष्टुडं वै यस्तु

पठेदमरः स नरो लभतेऽय्युतरामपदाम्बुजदास्यम् ॥ ९ ॥


॥ इति श्रीमन्मधुसूदनाश्रमशिष्याय्युतयतिविरचितं

श्रीसीतारामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

---

——  
*Shri Sitarama Ashtakam*

pdf was typeset on September 29, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

